JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

निजी एवं राजकीय विष्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता

पंकज सोनी
शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
श्री सत्य सांई प्रोद्योगिकी और चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर, मध्यप्रदेश

डॉ. **अरूण मोदक**
सह आचार्य, शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
श्री सत्य सांई प्रोद्योगिकी और चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर, मध्यप्रदेश

सारांश

पुस्तकालयों की विद्यार्थियों के लिए एक अहम भूमिका रहती है। विद्यार्थी विविध विषयों पर ज्ञान प्राप्ति के लिए पुस्तकालयों में जाते हैं तथा विभिन्न पाठ्य पुस्तकों के साथ ही संदर्भ ग्रंथ पुस्तकों से भी सूचनाएं एकत्र करते हैं। अधिकांशतः यह देखा गया है कि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में पाठ्य पुस्तकें तो सुलभ होती है किंतु संदर्भ ग्रंथ पुस्तकें बहुत कम संख्या में उपलब्ध होती है और जो होती भी है वह कई वर्ष पुरानी होती हैं। नवीन संस्करणों के अभाव में विद्यार्थियों को समसामयिक जानकारी नहीं मिल पाती है जिसके अभाव में विद्यार्थियों की ज्ञान प्राप्ति की तृष्णा अतृप्त ही रह जाती है। विश्वविद्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे प्रतिवर्ष कुछ नवीन संस्करण एवं नवीन संदर्भ ग्रंथ अवश्य क्रय करें। यह संदर्भ ग्रंथ अच्छी संख्या में भी क्रय किए जाने चाहिए तभी वे विद्यार्थियों को सुलभता से मुहैया कराए जा सकते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में इंदौर संभाग के दो निजी एवं दो राजकीय विश्वविद्यालयों के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से संदर्भ ग्रंथ पुस्तकों के संबंध में शोध कार्य किया गया। मुख्य शब्द – पुस्तकालय, संदर्भ ग्रंथ, उपलब्धता, स्नातक स्तर परिचय : पाठ्य पुस्तकें जहां एक ओर विषय से संबंधित व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करती है वहीं उनकी एक सीमा यह भी रहती है कि वह एक निश्चित दायरे में रहते हुए ही सूचनाएं प्रदान करती है। पाठ्यक्रम के अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा कई बार विद्यार्थियों को होती है, इसके लिए वे संदर्भ ग्रंथ पुस्तकें पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। विषय को विस्तार पूर्वक और गहनता के साथ समझने के लिए संदर्भ ग्रंथ पुस्तकें बड़ी सहायक होती हैं। उसमें पाठ्यक्रम से संबंधित एक–एक पहलू पर कई बार एक पूरी संदर्भ ग्रंथ पुस्तक उपलब्ध हो जाती है। यदि विद्यार्थी इस प्रकार संदर्भ ग्रंथ पुस्तकों को पढ़े तो उसे विषय विशेषज्ञता हासिल हो सकती है। यह देखते हुए संदर्भ ग्रंथ पुस्तकों की उपलब्धता विश्वविद्यालयों में सुनिश्चित होना बहुत जरूरी है। इंदौर संभाग के

विश्वविद्यालयों में संदर्भ ग्रंथ पुस्तकों का की स्थिति किस प्रकार की है क्या इससे विद्यार्थी संतुष्ट हैं तथा राजकीय एवं निजी विश्वविद्यालयों में क्या उपलब्धता में कोई अंतर है इन तथ्यों को परखने व जांचने हेतु यह शोध कार्य किया गया। पूर्ववर्ती शोध कार्यः

पुस्तकालय मुख्यतः तीन प्रकार की श्रेणियों में विभक्त किए जा सकते हैं :–

1- व्यक्तिगत पुस्तकालय
2- सार्वजनिक पुस्तकालय
3- सरकारी पुस्तकालय।

व्यक्तिगत पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या अधिकांशतः कम ही होती है और इसे स्वीकार किया जा सकता है, किंतु सार्वजनिक पुस्तकालयों में पुस्तकों की पर्याप्त संख्या उपलब्ध होनी ही चाहिए। वहां नवीन संस्करणों की उपलब्धता परम आवश्यक है जिससे कि समसामयिक ज्ञान अध्ययनकर्ताओं को मिल सके।[1]

विश्व में कई प्रसिद्ध और विशाल पुस्तकालय है जो कि अपने विशिष्ट संग्रह के लिए जाने जाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका निश्चित वाशिंगटन पुस्तकालय विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। रूस का लेनिन पुस्तकालय भी विश्व में अपना विशिष्ट स्थान रखता है जबकि भारत का कोलकाता स्थित राष्ट्रीय पुस्तकालय मैं भी काफी बड़ा संग्रह है यहां 10 लाख से अधिक पुस्तके हैं।[2]

पुस्तके व्यक्ति के चरित्र निर्माण में भी बड़ी भूमिका निभाती है पुस्तकों को व्यक्ति का एक सच्चा मित्र भी कहा जाता है। व्यक्ति जब उलझन में होता है तो उसे निष्पक्ष ज्ञान की जरूरत होती है और ऐसे समय में पुस्तकों से ही सहायता की अपेक्षा की जाती है। पुस्तकें विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों के लिए समान रूप से उपयोगी है अतः पुस्तकालयों में विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का संग्रह व्यक्तियों की अभिरुचि के अनुसार अलग–अलग विषयों पर किया जाता है।[3]

सार्वजनिक पुस्तकालयों की दशा निसंदेह निजी पुस्तकालयों से बेहतर रहती है किंतु यहां पर भी पुस्तकों की व्यवस्था संस्थागत पुस्तकालयों की अपेक्षा कुछ कम ही पाई जाती है। यहां आजकल पुस्तक प्रेमियों और पाठकों की संख्या में निरंतर कमी देखी जा रही है और इसके चलते यहां बजट के अभाव में नवीन संस्करण भी क्रय नहीं किए जा रहे हैं । इस कारण नए पाठक सार्वजनिक पुस्तकालय से नहीं जुड़ पा रहे हैं।[4]

पुस्तकालय मानव विकास की यात्रा का एक अभिन्न अंग है। पुस्तके पढ़ने से व्यक्ति की चिंतन करने की क्षमता और गहन पूर्वक विश्लेषण करने की योग्यता बढ़ती है। जब व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि होती है तब उसका बौद्धिक विकास भी होता है। उसे इतिहास में हुई विभिन्न घटनाओं वर्तमान और भविष्य की विभिन्न संभावनाओं के बारे में जानकारी पुस्तकों के माध्यम से सटीकता से प्राप्त होती है।[5]

उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को समझने हेतु उनसे संबंधित विभिन्न समंको एवं सूचनाओं को व्यवस्थित रूप से सीआरएम सॉफ्टवेयर के माध्यम से विकसित करना आवश्यक है तभी बेहतर रूप से सेवाएं दी जा सकती है। पुस्तकालयों के लिए भी सीआरएम सॉफ्टवेयर उपयोगी हो सकते हैं क्योंकि पाठकों से संबंधित विभिन्न सूचनाओं का विश्लेषण करते हुए उनकी आवश्यकता के अनुरूप यदि पुस्तकें उपलब्ध करवाई जाए तो पुस्तकालय अपनी सार्थक भूमिका निभा सकते हैं।[6]

शोध उद्देश्य :

शोध का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता का स्तर कितना संतोषप्रद है।

शोध परिकल्पना

1- निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता का स्तर सार्थक रुप से संतोषप्रद नहीं है।
2- निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि

इस शोध कार्य को वैज्ञानिक रूप से निष्पादित करने के लिए राजकीय विश्वविद्यालयों (देवी अहिल्या युनिर्वसिटी, इन्दौर और डॉ. बी. आर. अम्बेडकर युनिर्वसिटी ऑफ सोशल सांइसेस, इन्दौर) से स्नातक स्तर के 75.75 विद्यार्थियों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया। इसी प्रकार निजी विश्वविद्यालयों (सिमबाइसिस युनिर्वसिटी आफ अप्पलाइड सांइसेस और श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्याालय) से भी स्नातक स्तर के 75.75 विद्यार्थियों का यादृच्छिक रूप से शोध कार्य हेतु चयन किया गया। दोनों ही श्रेणी के विद्यार्थियों से साक्षात्कार के माध्यम से नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता से संबंधित सूचना एकत्र की गई।

शोध विश्लेषण

चयनित 150 विद्यार्थियों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि मात्र 1.33% विद्यार्थी ही मानते हैं कि निजी विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथ की उपलब्धता उत्तम है। कोई भी विद्यार्थी यह नहीं मानता कि व्यवस्था अति उत्तम है। 62.67% विद्यार्थियों का मानना है कि नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता निम्न या अति निम्न स्तरीय है। वहीं दूसरी ओर 36% विद्यार्थियों का ऐसा मानना है कि निजी विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता सामान्य स्तर की है। औसत रूप से अगर देखा जाए तो नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता का

स्तर 43.60% है जो कि साधारण से भी कम कहा जा सकता है।

तालिका 1 : निजी विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथ

स्तर	विद्यार्थी	भार	अंक
अति उत्तम	0	5	0
उत्तम	2	4	8
सामान्य	54	3	162
निम्न	63	2	126
अति निम्न	31	1	31
योग	**150**		**327**

चार्ट : **1**

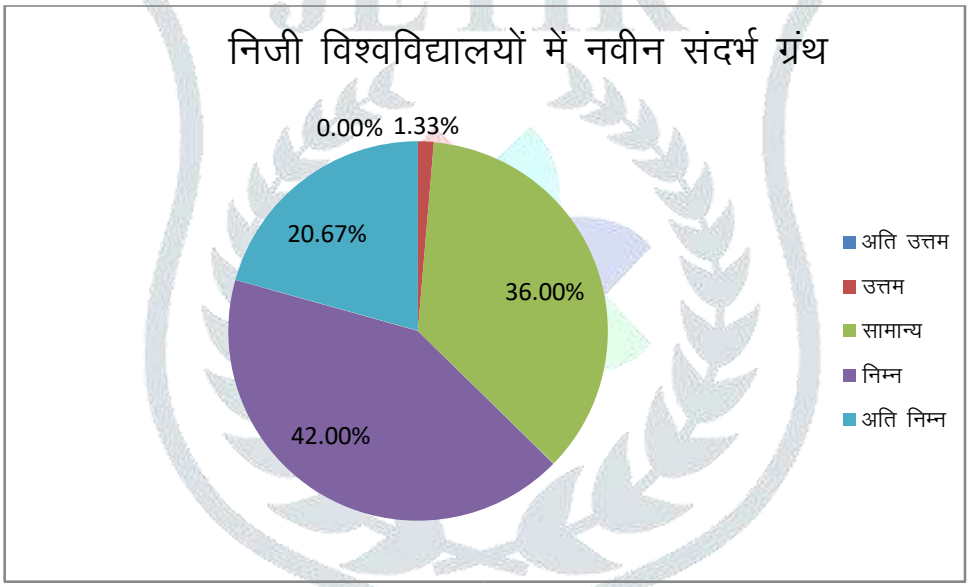

इसी प्रकार राजकीय विश्वविद्यालयों के चयनित 150 विद्यार्थियों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि मात्र 3.33% विद्यार्थी ही मानते हैं कि राजकीय विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता उत्तम है। कोई भी विद्यार्थी यह नहीं मानता कि व्यवस्था अति उत्तम है। 56.67% विद्यार्थियों का मानना है कि नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता निम्न या अति निम्न स्तरीय है। वहीं दूसरी ओर 40% विद्यार्थियों का ऐसा मानना है कि राजकीय विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता सामान्य स्तर की है। औसत रूप से अगर देखा जाए तो राजकीय विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता का स्तर 45.60% है जो कि साधारण से भी कम कहा जा सकता है।

तालिका 2 : राजकीय विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथ

स्तर	विद्यार्थी	भार	अंक
अति उत्तम	0	5	0
उत्तम	5	4	20
सामान्य	60	3	180
निम्न	57	2	114
अति निम्न	28	1	28
योग	**150**		**342**

चार्ट 2

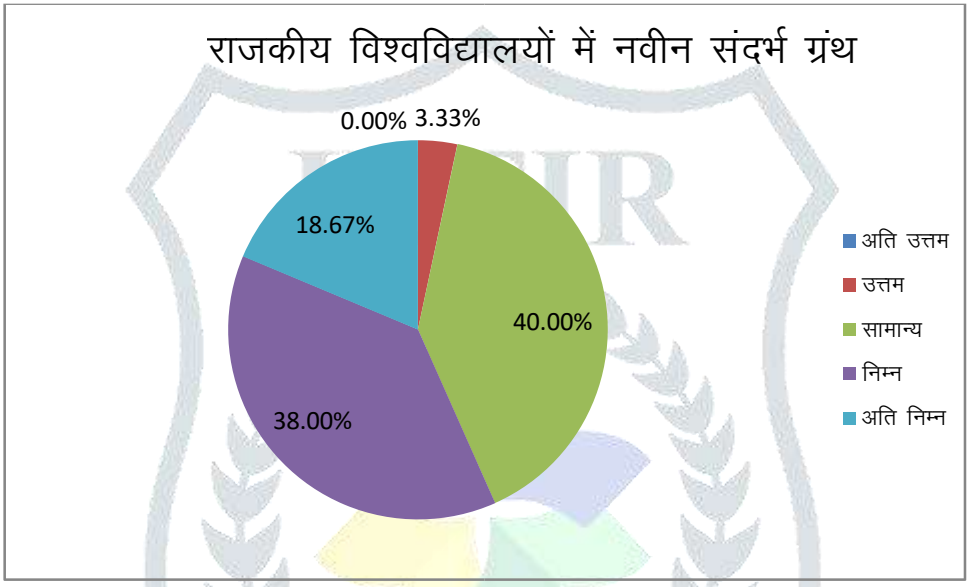

इस शोध कार्य द्वारा यह ज्ञात हुआ कि राजकीय एवं निजी दोनों ही विश्वविद्यालयों में औसत रूप से नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता का स्तर 44.60% है। क्या यह स्तर सार्थक रूप से अच्छा है यह जानने हेतु टी परीक्षण किया गया। परीक्षण यह बताता है कि टी का आंकलित मान 1.13 है जो कि उसके तालिका माने 1.96 से कम है अतः यह सार्थकता के स्तर से काफी कम है। इसी को आधार मानते हुए प्रथम परिकल्पना को पूर्णतः स्वीकार किया जाता है।

तालिका 3: निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता की सार्थकता

विद्यार्थी	स्वातंत्र्य चर	माध्य	मानक विचलन	टी का मान	महत्ता मान
300	299	44-60	5.37	1.13	0.54

राजकीय विश्वविद्यालयों में बजट कुछ अधिक मात्रा में उपलब्ध हो पाता है इस कारण वहां नवीन संदर्भ ग्रंथों की खरीद कुछ अधिक होती है किंतु क्या यह अंतर सार्थक है। वहां नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता सार्थक रूप से निजी विश्वविद्यालयों से अधिक है यह जानने हेतु जेड परीक्षण किया गया।

$$|Z| = \frac{P1-P2}{\sqrt{P0q0\left(\frac{1}{n1}+\frac{1}{n2}\right)}}$$

$$|Z| = \frac{0.456-0.43}{\sqrt{0.446X0.554\left(\frac{1}{150}+\frac{1}{150}\right)}} \quad \cdot \quad \cdot \quad = 0.35$$

परीक्षण के अनुसार जेड का आंकलित मान 0.35 है जो कि उसके तालिका में 1.96 से कम है। यह दर्शाता है कि दोनों विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः द्वितीय परिकल्पना को भी स्वीकृत किया जाता है।

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

शोध के आधार पर यह कहा जा सकता है कि निजी एवं राजकीय दोनों ही विश्वविद्यालयों में नवीन संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता वांछित स्तर से बहुत कम है। इसमें काफी सुधार की जरूरत है। पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त विद्यार्थियों को संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध नहीं करवाए जाएगें तब तक उनमें विश्लेषणात्मक समझ विकसित नहीं हो पाएगी। उनकी सोच के बहुआयामी विकास के लिए यह बहुत जरूरी है कि नवीन संदर्भ ग्रंथों का नियमित आधार पर क्रय किया जावे तथा उन्हें विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए सुलभ कराया जाए। राजकीय एवं निजी दोनों ही विश्वविद्यालयों को इस ओर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

संदर्भ :

- Mukherjee A K (1975) Reference work and its tools, Ed. 3, Calcutta World Press.
- Grogan Denis (1982) Science and technology: An introduction to the literature, 4th Ed. London, Clive Bingley.
- Aggarwal D.S. (1985) Lectures on universe of knowledge, New Delhi, Academic Publication.
- Chottey Lal (1986) Information sources in science and technology, Delhi, Bharti.
- Prashar R.G. (1997) Library and information science: Parameter and perspectives, New Delhi, Concept Publishing,
- Mehta and Baig (2018) Satisfaction from CRM of unorganized & organized real, Indian Journal of Applied Research, Volume 8 (11).